

प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 11 अंक 12

www.csir.res.in

दिसम्बर 2023

नई गृह निर्माण प्रौद्योगिकियां 2047 तक भारत के भव्य भवनों को आकार देंगी : डॉ. जितेंद्र सिंह



केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने आज कहा कि नई गृह निर्माण प्रौद्योगिकियां 2047 में, जब भारत अपनी आजादी के 100 साल मनाएगा, भारत के

भव्य भवनों को आकार देंगी।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने नई दिल्ली में सीएसआईआर-सीबीआरआई प्रौद्योगिकी हस्तांतरण मेले को संबोधित करते हुए कहा कि केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने विश्व स्तरीय और अत्याधुनिक भवन निर्माण प्रौद्योगिकियां

विकसित की हैं, जो न केवल मजबूत हैं बल्कि जलवायु और सूखे के अनुकूल तथा वैश्विक पर्यावरण मानदंडों के अनुरूप भी हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि देश भर में 37 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में से प्रत्येक की अनूठी प्रौद्योगिकियों को

प्रदर्शित करने के लिए पिछले साल उनके द्वारा आयोजित वन-वीक वन लैब कार्यक्रम की परिकल्पना और उद्घाटन किया गया था, जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं, क्योंकि सीएसआईआर – सीबीआरआई ने एक स्लॉट में 75 भवन और निर्माण प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया और उन्हें उद्योगों को हस्तांतरित कर दिया।

आने वाले दिनों में उद्योगों को सुरक्षित, टिकाऊ और किफायती भवन निर्माण के लिए ऐसी ही 108 प्रौद्योगिकियां उपलब्ध कराई जाएंगी।

डॉ. सिंह ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सबसे महत्वाकांक्षी और सबसे प्राथमिकता वाली स्कीम प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई) के लिए प्रौद्योगिकी प्रदाता के रूप में मुख्य आधार बनने के लिए सीबीआरआई की सराहना की। डॉ. सिंह ने उपस्थित जनसमूह को याद दिलाया कि प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री मोदी ने वादा किया था कि कोई भी भारतीय कच्चे घर में नहीं रहेगा और सभी पात्र लाभार्थियों के पास शौचालय और प्रकाश सुविधाओं के साथ पक्की छत होगी। उन्होंने कहा कि एक जनप्रतिनिधि के रूप में प्रधानमंत्री आवास योजना घरों में रहने वाले गरीब लाभार्थियों के चेहरे पर मुस्कान देखकर उन्हें प्रसन्नता हो रही है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने फोल्डेबल साल्ट



शेल्टर, जो मौसम और आग प्रतिरोधी है, विकसित करने के लिए सीबीआरआई की सराहना की और कहा कि इसके व्यापक सामाजिक प्रभाव होंगे।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के लगभग सभी सुधारों और नवोन्मेष पहलों का सामाजिक आधार है और उनका उद्देश्य

में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने कहा कि इन प्रौद्योगिकियों में मनुष्यों की जीवन स्थितियों को बदलने, स्थिरता बढ़ाने और लोगों की समग्र भलाई में सुधार करने की शक्ति है।

डॉ. सिंह ने कहा कि अनुसंधान संस्थानों और उद्योगों के बीच अंतर



को पाटकर, सीएसआईआर – सीबीआरआई रूडकी ने सभी के लिए किफायती, टिकाऊ और नवीन आवास के विजन को साकार करने की दिशा में एक बड़ी छलांग लगाई है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि आवास क्षेत्र में आज हम जिन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, वे बहुआयामी हैं, जिनमें सामर्थ्य और स्थिरता से लेकर आपदा लचीलापन और ऊर्जा दक्षता तक शामिल हैं।

हालांकि, आज हमारे पास जो विशेषज्ञता और ज्ञान है, उससे मुझे विश्वास है कि हम देश में इन चुनौतियों

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि आवास क्षेत्र में आज हम जिन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, वे बहुआयामी हैं, जिनमें सामर्थ्य और स्थिरता से लेकर आपदा लचीलापन और ऊर्जा दक्षता तक शामिल हैं।

हालांकि, आज हमारे पास जो विशेषज्ञता और ज्ञान है, उससे मुझे विश्वास है कि हम देश में इन चुनौतियों



से निपट सकते हैं और ऐसे भविष्य का निर्माण कर सकते हैं जहां हर व्यक्ति को सुरक्षित और आरामदायक आवास की सुविधा उपलब्ध हो।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने उद्योग जगत के सभी अग्रणी व्यक्तियों और प्रतिनिधियों से इन प्रौद्योगिकियों को अपनाने और देश में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए अपनी क्षमता का उपयोग करने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा कि इन प्रगतियों को सर्वोत्तम प्रथाओं में शामिल करके, न केवल प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त प्राप्त करने का अवसर मिल सकता है, बल्कि समाज की भलाई में महत्वपूर्ण योगदान भी दिया जा सकता है।

डीएसआईआर के सचिव एवं सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी ने अपने संबोधन में कहा कि पिछले 77 वर्षों में निरंतर अनुसंधान और विकास के माध्यम से, सीएसआईआर-सीबीआरआई रुडकी आवास प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान के रूप में उभरा है।

उन्होंने कहा कि प्रतिभाशाली व्यक्तियों द्वारा की गई कई प्रगतियों से न केवल

निर्माण उद्योग में क्रांति आई, बल्कि इसने अनगिनत व्यक्तियों के जीवन पर भी सकारात्मक प्रभाव डाला।

उन्होंने कहा कि कुछ उल्लेखनीय प्रौद्योगिकियां अंडर-रीमड पाइल्स, अपशिष्ट से धन, पूर्व फैब्रीकेटेड आवास, अग्नि सुरक्षा, पेड़ों के बिना लकड़ी, सुरक्षात्मक कोटिंग्स और आज स्थानांतरित की जा रही प्रौद्योगिकी हैं।

सीबीआरआई के निदेशक श्री प्रदीप कुमार ने कहा कि यह बताते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है कि सीएसआईआर-सीबीआरआई ने सामाजिक लाभ की परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित किया है और पीएमएवाई-जी के लिए भारत सरकार के राष्ट्रीय मिशन "सभी के लिए आवास" में व्यापक स्तर पर योगदान दिया है।

संस्थान ने ग्रामीण भवनों के समावेशी विकास के लिए ग्रामीण आवास टाइपोलॉजी संग्रह "पहल" विकसित की है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने टेक्नोलॉजी कम्पेंडियम भी जारी किया, जो दो खंडों में विभिन्न टिकाऊ और किफायती प्रौद्योगिकियों के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका है, जिसमें भवन निर्माण विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में स्वदेशी तरीके से विकसित वर्तमान

□ डॉ. सिंह ने नई दिल्ली के हैबिटेट सेंटर में सीएसआईआर-सीबीआरआई प्रौद्योगिकी हस्तांतरण मेले को संबोधित किया, जहां 75 भवन और निर्माण प्रौद्योगिकियों को एक स्लॉट में रखा गया और उन्हें उद्योगों को हस्तांतरित किया गया

□ डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा, केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने विश्व स्तरीय और अत्याधुनिक भवन निर्माण प्रौद्योगिकियां विकसित की हैं, जो न केवल मजबूत और जलवायु तथा सूखे के अनुकूल हैं, बल्कि वैश्विक पर्यावरण मानदंडों के अनुरूप भी हैं

□ आने वाले दिनों में उद्योगों को सुरक्षित, टिकाऊ और किफायती भवन निर्माण के लिए ऐसी 108 प्रौद्योगिकियां उपलब्ध कराई जाएंगी: डॉ. जितेंद्र सिंह

□ डॉ. सिंह ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सबसे महत्वाकांक्षी और सबसे प्राथमिकता वाली स्कीम प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई) के लिए प्रौद्योगिकी प्रदाता के रूप में मुख्य आधार बनने के लिए सीबीआरआई की सराहना की

□ डॉ. जितेंद्र सिंह ने फोल्डेबल साल्ट शेल्टर, जो मौसम और आग प्रतिरोधी है, विकसित करने के लिए सीबीआरआई की सराहना की और कहा कि इसके व्यापक सामाजिक प्रभाव होंगे

उन्नत प्रौद्योगिकियों के साथ-साथ समय-सिद्ध प्रौद्योगिकियों को शामिल किया गया है।

सीएसआईआर-सीरी में 8वें राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस का आयोजन

केंद्रीय आयुष मंत्रालय, भारत सरकार तथा सीएसआईआर मुख्यालय के दिशा निर्देशानुसार 8वें राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य में 8 नवंबर, 2023 को सीएसआईआर-सीरी में आयुर्वेद पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में प्रसिद्ध आयुर्वेद विशेषज्ञ डॉ रमेश जाजू, वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक (सेवानिवृत्त), बिरला सार्वजनिक अस्पताल, पिलानी, ने 'जीवन में आयुर्वेद का महत्व एवं उपयोगिता' विषय पर रोचक एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया।

कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक ने की। संस्थान के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकगण सहित नियमित एवं अन्य सहकर्मी तथा प्रशिक्षार्थी उपस्थित थे।

डॉ रमेश जाजू एवं अन्य अधिकारियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया तथा इसके बाद आयुर्वेद के जनक भगवान धन्वंतरि के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

अपने स्वागत एवं अध्यक्षीय संबोधन में डॉ अभिजीत कर्माकर ने कहा कि भारत सरकार द्वारा स्वदेशी चिकित्सा पद्धति के प्रचार-प्रसार के इस महत्वाकांक्षी अभियान के अंतर्गत देशभर में 11 अक्टूबर से 10 नवंबर की अवधि को आयुर्वेद महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है।

उन्होंने स्वदेशी चिकित्सा पद्धति में आयुर्वेद की महत्ता पर प्रकाश डालते

हुए उन्होंने अन्य स्वदेशी पद्धतियों की भूमिका को भी उद्धृत किया।

अपने सारगर्भित व्याख्यान में डॉ रमेश जाजू आयुर्वेद चिकित्सक (सेवानिवृत्त), बिरला सार्वजनिक अस्पताल, पिलानी ने कहा कि आयुर्वेद स्वस्थ व्यक्ति को स्वस्थ

रखने और अस्वस्थ व्यक्ति को स्वस्थ करने की चिकित्सा पद्धति का नाम है। अपने व्याख्यान में उन्होंने अनुशासित दिनचर्या को अच्छे स्वास्थ्य का आधार बताते हुए कहा कि स्वस्थ रहने के लिए आदर्श आहार के साथ-साथ भोजन एवं आहार का समय भी निश्चित होना अनिवार्य है।

इस अवसर पर उन्होंने शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक बातों पर भी प्रकाश डाला।

व्याख्यान के उपरांत डॉ कर्माकर ने मुख्य अतिथि डॉ जाजू को शॉल एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि भगवान धन्वंतरि चिकित्सा विज्ञान एवं आयुर्वेद के जनक थे। अपने संक्षिप्त संबोधन में उन्होंने राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस मनाने की पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला।



कार्यक्रम का संचालन करते हुए मीडिया एवं जनसंपर्क यूनिट के प्रमुख श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने बताया कि आयुष मंत्रालय द्वारा इस वर्ष आयुर्वेद अभियान के लिए 'आयुर्वेद-प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रतिदिन' नारा दिया है। उन्होंने सभी सहकर्मियों को आमंत्रित अतिथि का परिचय भी दिया।

आमंत्रित व्याख्यान के उपरांत संस्थान की डिस्पेन्सरी में चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया।

चिकित्सा शिविर में संस्थान कार्मिकों एवं उनके परिजनों ने चिकित्सकीय परामर्श और दवाएं प्राप्त कीं। डॉ जाजू ने संस्थान में सभी सुविधाओं एवं व्यवस्थाओं के लिए निदेशक डॉ पी सी पंचारिया एवं प्रशासन नियंत्रक श्री शरण के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यशाला का समापन राष्ट्र गान से हुआ।



के डॉ दारा सिंह रौतवार, डॉ कलीम मुहम्मद एवं उनकी टीम के सदस्य उपस्थित थे। इनके अलावा इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिकों सहित अन्य सहकर्मी भी उपस्थित थे।

डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने जयपुर से संस्थान में पधारे डॉ दारा सिंह एवं उनके साथियों का औपचारिक स्वागत किया। अपने संबोधन में डॉ पंचारिया ने

अनुभव साझा किए। उन्होंने इसके लाभों को रेखांकित करते हुए सभी लोगों को इसे अपनाने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर डॉ दारा सिंह एवं डॉ कलीम ने आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपांग बताते हुए संतुलित आहार एवं उचित ऋतुचर्या का महत्व बताया। दोनों विद्वानों ने आयुर्वेद की ऐतिहासिक एवं पौराणिक पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डालते हुए भगवान धनवंतरि को नमन किया। अपने संबोधन में डॉ सिंह एवं डॉ कलीम ने आचार्य अश्वनी कुमार, आचार्य सुश्रुत, आचार्य चरक आदि ऋषियों को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

कार्यक्रम के समन्वयक डॉ प्रमोद तंवर, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, पीएमई ने इस शिविर एवं प्रदर्शनी के आयोजन में सहयोग के लिए एमएसएआरआई, जयपुर के अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

अंत में प्रशासन नियंत्रक श्री जयशंकर शरण ने आमंत्रित अतिथियों एवं निदेशक के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने सभी उपस्थित सहकर्मियों को आयुर्वेद के लाभ बताते हुए शिविर से लाभान्वित होने का आग्रह किया।

स्वास्थ्य शिविर एवं आयुर्वेद प्रदर्शनी का आयोजन

8वें राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की शृंखला में आयुर्वेद दिवस (दिनांक 10 नवंबर, 2023) पर संस्थान में महाराव शेखाजी क्षेत्रीय आयुर्वेद संस्थान (MSARI), जयपुर के सौजन्य से स्वास्थ्य शिविर एवं आयुर्वेद प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

शिविर एवं प्रदर्शनी का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने किया। इस अवसर पर क्षेत्रीय आयुर्वेद संस्थान

जयपुर से संस्थान में पधारे डॉ दारा सिंह एवं उनके साथियों का औपचारिक स्वागत किया। अपने संबोधन में डॉ पंचारिया ने



आयुर्वेद को सबसे प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति बताते हुए इसके संबंध में अपने

स्वास्थ्य शिविर में आए सहकर्मियों एवं उनके परिजनों सहित अन्य लोगों को महाराव शेखाजी क्षेत्रीय आयुर्वेद संस्थान (MSARI), जयपुर के अधिकारियों ने निशुल्क चिकित्सा परामर्श दिया एवं औषधियों का वितरण किया। साथ ही आयुर्वेद के संबंध में प्रचार सामग्री/साहित्य आदि का भी वितरण किया गया।

डॉ दारा सिंह ने संस्थान द्वारा प्रदत्त

सभी सुविधाओं एवं सहयोग के लिए निदेशक, सीएसआईआर-सीरी के प्रति आभार व्यक्त किया। शिविर के लाभार्थियों ने भी इस आयोजन की सराहना करते हुए सीरी व एमएसएआरआई को धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने अतिथियों का औपचारिक परिचय देते हुए

स्वागत किया।

उन्होंने बताया कि केंद्रीय आयुष मंत्रालय एवं सीएसआईआर मुख्यालय से प्राप्त दिशानिर्देशों के अनुपालन में संस्थान में आयुर्वेद दिवस का आयोजन किया जा रहा है।

इस प्रकार संस्थान में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित चिकित्सा शिविरों में लगभग 300 व्यक्ति लाभान्वित

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी), पालमपुर द्वारा पुष्प-कृषि मेले का आयोजन

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी), पालमपुर ने 10 अगस्त 2023 को डीआईएचएआर, डीआरडीओ, लेह में "सीएसआईआर-फलोरीकल्चर मिशन II के अंतर्गत "पुष्प कृषि मेले" का आयोजन किया जिसके मुख्य अतिथि लद्दाख के माननीय उपराज्यपाल ब्रिगेडियर (डॉ.) बी.डी. मिश्रा (सेवानिवृत्त) थे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि एडवोकेट ताशी ग्यालसन, मुख्य कार्यकारी पार्श्वद (सीईसी), एलएचडीसी, लेह, लद्दाख, श्री जामयांग त्सेरिंग नामग्याल, संसद सदस्य, लद्दाख, श्री रविंदर कुमार, आईएस सचिव कृषि/बागवानी यूटी लद्दाख और डॉ.ओपी चौरसिया, निदेशक, डीआईएचएआर, डीआरडीओ ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

माननीय उपराज्यपाल ने अपने संबोधन में लद्दाख घाटी में मिशन की उपलब्धियों की सराहना की।

उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि इस क्षेत्र में फूलों के उत्पादन की असीम संभावनाएँ हैं तथा "फूल उगाओ फूलों का विस्तार करो" का नारा भी दिया। साथ ही

उत्पादन, बे-मौसमी खेती, कोल्ड स्टोरेज और बेहतर परिवहन के माध्यम से फलोरीकल्चर को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

उन्होंने मुख्य कार्यकारी पार्श्वद, एलएचडीसी, लेह से पूरे क्षेत्र में फूलों की खेती में लोगों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने का आवाहन किया।

इस अवसर पर उनके द्वारा 'लद्दाख में सीएसआईआर-फलोरीकल्चर मिशन' पर एक विवरणिका जारी की और किसानों को लिलियम, ग्लैडियस और ट्यूलिप की रोपण सामग्री वितरित की।

उन्होंने लेह स्थित महिला स्वयं सहायता समूहों और राग्युल जैविक उत्पादक

साथ उन्होंने "महिलाएं, लद्दाख और फूलों" को भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना बताया।

इसके अलावा, उन्होंने फूलों के

कंपनी के किसानों को प्रशंसा पत्र भी प्रदान किए।

माननीय उपराज्यपाल की उपस्थिति



में, सीएसआईआर-आईएचबीटी ने लद्दाख प्रगतिशील सोसायटी, लेह और मेंडोक सहकारी सोसायटी, कारगिल के साथ एक सामग्री हस्तांतरण समझौते (एमटीए) पर हस्ताक्षर किए।

एलएचबीटीसी, लेह के मुख्य कार्यकारी पार्षद (सीईसी) एडवोकेट ताशी ग्यालसन ने किसानों से आत्मनिर्भर कृषि और उद्यमिता को बढ़ावा देने का आग्रह किया।

सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर के निदेशक डॉ. सुदेश कुमार यादव ने लद्दाख में सीएसआईआर-फ्लोरीकल्चर मिशन की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि मिशन के माध्यम से

लिलियम, ग्लाडिओलस और ट्यूलिप जैसी फूलों की खेती लगभग 10 एकड़ भूमि पर की जा रही जिससे लेह और कारगिल के 80 किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

उन्होंने लद्दाख में फूलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए संस्थान की क्षमता और नए अवसरों के बारे में विस्तार से बताया।

डॉ. यादव ने इस बात पर भी जोर दिया कि विदेशों से पुष्प आयात कम करने के लिए लद्दाख को बल्ब उत्पादन केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है।

फूल उत्पादन, विपणन और फूलों की खेती से संबंधित गतिविधियों के बारे में जानने के लिए 100 से अधिक प्रदर्शक,

उद्यमी और निर्माता सक्रिय रूप से इस कार्यक्रम में शामिल हुए। श्री पवन कोटवाल, उपराज्यपाल लद्दाख के सलाहकार, डॉ. महेंद्र दानोकर, मुख्य वैज्ञानिक टीएमडी, सीएसआईआर मुख्यालय, डॉ. एस.के. मेहता, वीसी यूनिवर्सिटी ऑफ लद्दाख, श्री मोसेस कुन्जांग, निदेशक, सहकारिता विभाग, श्री स्टेनजिंग चोस्फेल, कार्यकारी पार्षद कृषि, कार्यक्रम में कृषि विभाग के एसडीएओ श्री थिनलेस दावा और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी भाग लिया।

इस कार्यक्रम में प्रेस और मीडिया के प्रतिनिधियों के साथ-साथ डीआरडीओ और सीएसआईआर-आईएचबीटी के कर्मचारी भी शामिल हुए।

सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2023 का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थाकन (सीरी), पिलानी में 30 अक्टूबर से 6 नवंबर, 2023 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया।

भारत सरकार के केंद्रीय सतर्कता आयोग तथा सीएसआईआर मुख्यालय, नई दिल्ली के दिशा निर्देशानुसार संस्थान में आयोजित उद्घाटन सत्र में 30 अक्टूबर, 2023 को संस्थान के निदेशक डॉ. पी. सी. पंचारिया ने सभी सहकर्मियों को भ्रष्टाचार से संघर्ष तथा अपने दायित्वों को ईमानदारी से निर्वहन करने की शपथ दिलवाई।

अपने संक्षिप्त उद्बोधन में निदेशक महोदय ने सभी सहकर्मियों से अपने जीवन में जागरूक रहकर सतर्कता से कार्य करते हुए भ्रष्टाचार मुक्त



भारत बनाने में योगदान देने का आह्वान किया। इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों सहित अन्य सहकर्मी भी उपस्थित

थे। केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा इस वर्ष के आयोजन का केंद्रीय विषय "भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें"



निर्धारित किया गया था।

प्रशासन नियंत्रक श्री जयशंकर शरण ने कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की तथा सप्ताह पर्यंत आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की विस्तृत की जानकारी दी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों/गतिविधियों का विवरण निम्नित है :

1. विवज (प्रश्न मंच) सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान संस्थान के कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए विवज प्रतियोगिता व भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में "भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें" के लिए सतर्कता संबंधी रोचक प्रश्नों के माध्यम से सहकर्मियों का ज्ञानवर्धन किया गया।

2. निबंध प्रतियोगिता : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नूहन्द (चूरु) में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में भ्रष्टाचार

का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति

समर्पित रहें विषय पर विद्यालय के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

3. भाषण प्रतियोगिता : विषय-भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें। (सीरी कर्मचारियों के लिए)

4. वकाथॉन का आयोजन : सहकर्मियों में जागरूकता के उद्देश्य से दिनांक 02.11.2023 को सायं 3.00 बजे वकाथॉन का आयोजन किया जिसमें सैकड़ों सहकर्मी सम्मिलित हुए। यह वकाथॉन संस्थान के प्रवेश द्वार से प्रारंभ होकर सीरी कॉलोनी में गेट नंबर 1 से होते हुए वापस प्रवेश द्वार पहुंची।

वकाथॉन के दौरान सहकर्मी भ्रष्टाचार उन्मूलन से संबंधित स्लोगन लगी पताकाएं हाथ में लिए हुए थे। इस दौरान निदेशक डॉ. पंचारिया ने सतर्कता व वकाथॉन की उपयोगिता पर विस्तृत प्रकाश

डाला।

4. सतर्कता जागरूकता
ग्राम सभा : पिलानी के निकटवर्ती ग्राम धौधवा (बिचला) में ग्राम सभा का आयोजन किया

गया जिसमें लोगों ने काफी उत्साह के साथ भाग लिया। ग्राम सभा में वार्ड पंच सहित 60 से अधिक गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए जिसमें संस्थान की ओर से वित्त एवं लेखा नियंत्रक श्री जयप्रकाश इन्दौरा; प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण; प्रशासनिक अधिकारी श्री महेन्द्र सिंह; वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी श्री रमेश बौरा; हिन्दी अधिकारी श्री मणि भूषण सिंह, अनुभाग अधिकारी श्री राजन तिर्की; तकनीकी अधिकारी श्री आर. के. सिंह, तथा वरिष्ठ सचिवालय सहायक श्री गुरमेन्द्र सिंह आदि उपस्थित हुए। समिति अध्यक्ष श्री इन्दौरा ने नागरिकों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई।

प्रशासन नियंत्रक ने भ्रष्टाचार के दूरगामी दुष्प्रभावों पर कहानियों के माध्यम से

विस्तृत प्रकाश डाला। अपने संबोधन में नागरिकों को सतर्क व जागरूक रहते हुए केन्द्र सरकार व राज्य सरकार की सभी योजनाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया।

प्रशासनिक अधिकारी श्री महेन्द्र सिंह ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभी नागरिकों से भ्रष्टाचार उन्मूलन में अधिकाधिक योगदान देने का आह्वान किया।

हिन्दी अधिकारी श्री मणि भूषण सिंह ने सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 को नागरिकों के लिए मुख्य हथियार बताया। साथ ही ऑनलाइन सूचनाओं के उपयोग का लाभ उठाए जाने के लिए आह्वान किया।

अन्त में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे गणमान्य वरिष्ठ नागरिकों हवलदार श्री हवा सिंह एवं सूबेदार श्री प्रताप सिंह ने सीएसआईआर-सीरी द्वारा जागरूकता ग्राम सभा आयोजन करने के लिए उनके धौधवा गाँव का चयन करने व कार्यक्रम आयोजित कर भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए ग्रामवासियों को प्रेरित करने के लिए आभार जताया और भविष्य में भी ऐसी ग्राम सभाएं आयोजित करने का अनुरोध किया।

5. नुक्कड़ नाटक : सीरी विद्या मंदिर के छात्र-छात्रों द्वारा सीरी कॉलोनी में शानदार नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत दी गई। नाटिका के विभिन्न दृश्यों में भ्रष्टाचार के विभिन्न तरीके प्रस्तुत कर उपस्थित जनसमूह को भ्रष्टाचार निवारण के लिए प्रेरित किया।

सीरी कॉलोनी के अलावा

यह नाटिका पिलानी बस स्टैंड पर भी प्रस्तुत की गई जिसका संचालन वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी श्री रमेश बौरा ने बाजीगर के अंदाज में करते हुए बस स्टैंड पर मौजूद जन-सैलाब को सैकेंडों में ही आकर्षित कर लिया।

6. विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन सप्ताह से पूर्व सतर्कता अभियान के अंतर्गत



अधिकारियों के व्याख्यान भी आयोजित किए गए। विवरण निम्नवत है :

क) सूचना का अधिकार अधिनियम सहकर्मियों के लिए सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें हिन्दी अधिकारी ने उक्त विषय पर केन्द्रीय सूचना आयोग के ऐतिहासिक निर्णयों सहित अधिनियम पर गहन प्रकाश डाला और कर्मिकों के प्रश्नों का उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा शान्त की। उन्होंने कार्यालयी गतिविधियों में सूचना प्रदान करने की रूपरेखा से भी अवगत कराया। साथ ही इसे आम आदमी का मुख्य हथियार बताते हुए इसका व्यक्तिगत जीवन में भी लाभ उठाने की अपील की।



ख) नैतिकता और शासन व्यवस्था को नैतिक और शासन विषय पर भी एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें डॉ. राहुल प्रजेश, प्रधान वैज्ञानिक ने सहकर्मियों को विस्तृत व उपयोगी जानकारी दी।

ग) वैज्ञानिक व गैर-वैज्ञानिक स्टाफ की पदोन्नति प्रक्रिया/वैज्ञानिक व गैर-वैज्ञानिक स्टाफ की पदोन्नति विषय पर श्री कृष्ण राज सिंह, प्रशासनिक अधिकारी, सीएसआईआर-आईआईटीआर, लखनऊ ने सारगर्भित व्याख्यान दिया और प्रश्नों के सहकर्मियों के प्रश्नों के उत्तर देकर कर्मिकों की जिज्ञासा को शान्त किया।

समापन एवं पुरस्कार वितरण

समारोह : सतर्कता जागरूकता सप्ताह का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता निदेशक डॉ पी. सी. पंचारिया ने की। समापन समारोह में संस्थान के

निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने सप्ताह के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

इस अवसर पर सीरी विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने पुनः नुक्कड़ नाटिका का प्रदर्शन किया।

समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक ने की। कार्यक्रम में वित्त एवं लेखा नियंत्रक श्री जयप्रकाश इंदौरा, प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण व अन्य अधिकारियों एवं सहकर्मियों तथा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नूहन्द (चूरू) के वरिष्ठ अध्यापक श्री राजेश पूनियाँ सहित सप्ताह के दौरान

आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ अभिजित कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक ने देश के प्रथम गृहमंत्री और स्वतंत्रता के उपरांत देश के एकीकरण के प्रणेता सरदार वल्लभ भाई पटेल दृढ़ता का परिचय देते हुए उनसे प्रेरणा लेकर भ्रष्टाचार मुक्त राष्ट्र बनाने में योगदान देने का आह्वान किया।

उन्होंने बताया कि देश के नीति निर्माताओं ने तत्कालीन विश्व की प्रमुख व्यवस्थाओं के संविधानों से अच्छी बातें चुनकर अपने देश के नागरिकों को उत्कृष्ट संविधान दिया।

उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार मुक्त भारत के लिए प्रत्येक नागरिक को अपनी भूमिका

तय करनी होगी कि वह क्या योगदान दे सकता है। उन्होंने भ्रष्टाचार पर रोकथाम के लिए पारदर्शिता को प्रमुख हथियार बताते हुए सरकार द्वारा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों पर भी प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि सतर्क और जागरूक नागरिक देश की उन्नति में अपना अधिक योगदान देते हैं।

अंत में उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को अपनी ओर से बधाई देते हुए शुभकामना दी।

इससे पूर्व आयोजन समिति के अध्यक्ष व वित्त एवं लेखा नियंत्रक श्री जय प्रकाश इंदौरा ने सप्ताह पर्यन्त आयोजित किए गए कार्यक्रमों की जानकारी दी।

अंत में आयोजन समिति सदस्य एवं

प्रशासन नियंत्रक श्री जय शंकर शरण ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए प्रतियोगिताओं में भागीदारी करने वाले सहकर्मियों, पुरस्कार विजेताओं, सतर्कता अनुभाग, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नूहन्द (चूरू) के शिक्षकों व छात्राओं के प्रति आभार जताया। तथा निदेशक, सीएसआईआर-सीरी के मार्गदर्शन में आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने के लिए सभी सहकर्मियों तथा प्रतिभागियों का आभार प्रकट किया।

इससे पूर्व सतर्कता जागरूकता सप्ताह के समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने सतर्कता सप्ताह आयोजन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला।

सीएसआईआर-आईआईसीटी, हैदराबाद में हिंदी पखवाड़ा-2023 का आयोजन

सीएसआईआर-आईआईसीटी में हिंदी दिवस-2023 के अवसर पर सितंबर महीने में दिनांक 11 सितंबर 2023-25 सितंबर 2023 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इसके अंतर्गत हिंदी निबंध, वार्तालाप, कार्यालीन शब्दावली, टिप्पण आलेखन एवं राजभाषा नीति, पुस्तक समीक्षा, टंकण, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

साथ ही हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में संस्थान के निदेशक महोदय ने सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित की एवं संदेश के द्वारा राजभाषा हिंदी के व्यापक फलक पर चर्चा करते हुए राजभाषा हिंदी

में अत्यधिक काम करने की अपील की।

उन्होंने आजादी के आंदोलन में कश्मीर से कन्याकुमारी तक लोगों को जोड़ने में हिंदी की भूमिका को रेखांकित करते हुए वर्तमान में विदेशों में भारत की प्रतिनिधि भाषा के रूप

में हिंदी के महत्व पर चर्चा की। उन्होंने बाजार में विज्ञापनों, ऑनलाइन खरीदारी आदि में हिंदी की बढ़ती दखल का जिक्र करते हुए जन-जन तक वैज्ञानिक अनुसंधानों के लाभ पहुँचाने में हिंदी

की आवश्यकता पर बल दिया तथा कहा कि इस दिशा में सीएसआईआर - आईआईसीटी संस्थान से हिंदी पत्रिका 'स्पंदन' का पुनः प्रकाशन प्रारंभ होने वाला है।

हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं में इस वर्ष वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ-साथ





छात्रों और परियोजना स्टाफों को भी शामिल किया गया।

सभी प्रतियोगिताओं की अभिकल्पना ज्ञान आधारित रोचकता और सूचना से भरपूर थी। हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता के विषय समसामयिक, स्थानीयता और हिंदी पर आधारित रखा गया।

यथा—हमारा शहर हैदराबाद, हिंदी के प्रगामी प्रयोग में हिंदीतर भाषियों का योगदान, पुस्तकालय का महत्व, विज्ञान के क्षेत्र में भारत, विश्व पटल पर हिंदी, सीएसआईआर का राष्ट्र निर्माण में योगदान। लगभग सभी विषयों पर प्रतिभागियों के द्वारा बड़ी संख्या में प्रतिभागिता की गई। हिंदी में बातचीत को बढ़ावा देने के लिए केवल ग्रुप 1 (4) स्तर के कर्मचारियों के लिए हिंदी वार्तालाप प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य दैनंदिन जीवन में हिंदी बोलने के लिए कर्मचारियों को प्रेरित करना था, अतएव इसके विषय दैनंदिन कार्यों पर आधारित रखे गए, जैसे कि घर से कार्यालय आने, अतिथि से, नए व्यक्ति से हैदराबाद के बारे में, त्योहार

पर खरीददारी, छुट्टी लेने के लिए, लोन लेने के लिए बैंक के प्रबंधक, सब्जी, किराना सामान की खरीददारी आदि पर बातचीत थे।

प्रशासन, स्थापना, वित्त व लेखा, भर्ती, सामान्य, चिकित्सा आदि अनुभागों के दैनंदिन कार्यों में हिंदी के शब्दों के अत्यधिक प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा नीति, नियमों की जानकारी के लिए कार्यालयीन शब्दावली, टिप्पण आलेखन एवं राजभाषा नीति प्रतियोगिता आयोजित की गई।

इस प्रतियोगिता में दिए गए विषय पर टिप्पण, कार्यालय ज्ञापन, सूचना, आमंत्रण पत्र, आवेदन पत्र आदि लिखने और राजभाषा नीति पर बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे गए। इसमें अधिकारियों, कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। कंप्यूटर, मोबाइल पर हिंदी में काम को बढ़ावा देने और ई-ऑफिस के मद्देनजर हिंदी में टंकण के लिए प्रेरित करने के लिए हिंदी टंकण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में हिंदी टंकण के लिए रोचक सामग्री दी गई। इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए हिंदी टंकण न जानने वाले वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों ने हिंदी अनुभाग की सहायता से हिंदी टंकण

सीखा। परिणामस्वरूप इसमें भाग लेने वालों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक रही।

मौजूदा भागम-भाग भरे जीवन में आम लोग पुस्तकों से दूर होते जा रहे हैं। जीवन में पुस्तकों की जगह छोटे-छोटे रील्स, सोशल मीडिया के पोस्ट जगह लेने लगे हैं। इनमें क्षणिक मनोरंजन तो होता है, परंतु प्रायः स्थायित्व, सामाजिक संदेश, चेतना, जानकारी का अभाव होता है। अतएव इस आलोक में हिंदी पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता रखी गई। इसमें भाग लेने के लिए प्रतिभागियों को प्रतियोगिता से पहले हिंदी अनुभाग से हिंदी पुस्तक निर्गत कराकर उसकी समीक्षा प्रस्तुत करनी थी।

इस प्रतियोगिता में वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, शोध छात्रों, परियोजना स्टाफों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा बड़ी संख्या में हिंदी कहानी, उपन्यास, नाटक आदि की पुस्तकें निर्गत कराईं। इस प्रतियोगिता से प्रतिभागी हिंदी, पुस्तक और पुस्तकालय से जुड़े ही, साथ ही उनकी शब्द संपदा में वृद्धि और भाषा का भी परिमार्जन हुआ।

आमंत्रित बाह्य निर्णायक डॉ. वी. वेंकटेश्वर राव, भाषाकर्मी सह सेवानिवृत्त

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), सिंडिकेट बैंक ने प्रतिभागियों की प्रतिभागिता, प्रस्तुति की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस तरह की नवोन्मेषी पहल होती रहनी चाहिए, जो कि कार्मिकों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुझान को बढ़ावा देते हैं।

विषय-विशेष पर हिंदी भाषा में विचार रखने, अपनी बात कहने, संबोधित करने की हिचक को दूर करने के लिए हिंदी वाक् प्रतियोगिता रखी गई।

इसके विषय समसामयिक और प्रसंगानुकूल रखा गया। यथा-पेपरलेस कामकाज : आज की आवश्यकता, हिंदी की वर्तमान स्थिति, सोशल मीडिया का जीवन पर प्रभाव, भारत में विज्ञान शिक्षण, राष्ट्रीय एकता में हिंदी का महत्व आदि। इसमें लगभग सभी विषयों पर वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, परियोजना स्टाफों, शोधार्थियों ने पूर्व तैयारी के साथ बड़ी संख्या में भाग लिया।

इस प्रतियोगिता के आमंत्रित निर्णायक डॉ. प्रियदर्शिनी, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद ने प्रतिभागियों की प्रतिभागिता की प्रशंसा की।

उन्होंने कहा कि हिंदी का आज अखिल भारतीय रूप है। बंबइया हिंदी, दक्खिनी हिंदी, मलयाली हिंदी आदि। हम सभी को यह सोचे बिना कि हमारी हिंदी गलत है, इसका प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि उन्हें खुशी हुई कि आप सभी ने धड़ल्ले से दिए गए विषयों पर बात की।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 खेल-खेल में शिक्षा की सिफारिश करती है। यानी कि ज्ञान-विज्ञान, जानकारी मनोरंजन की चाशनी में डूबोकर दी जाए तो ज्ञान-विज्ञान का कारोबार निरस न होकर सरस हो जाता है। इसके आलोक में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।



यह प्रतियोगिता समूह आधारित थी, जिसमें पशु-पक्षी, प्रसिद्ध इमारतों, लोक. प्रिय हिंदी फिल्म के गानों, संवादों, हस्तियों आदि पर आधारित प्रश्न पूछे गए। दरअसल भाषा केवल अमूर्त शब्दों का संग्रह नहीं बल्कि मूर्त जीवों, वस्तुओं, प्रसिद्ध इमारतों, घटनाओं पर आधारित मुहावरों, लोकोक्तियों, प्रसंगों आदि का खजाना है।

इनसे भाषा मार्मिक, जीवंत होती है तथा संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है। प्रतिभागियों ने बड़ी संख्या में इस प्रतियोगिता का लुत्फ उठाते हुए भागीदारी की।

पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करने के लिए मुख्य अतिथि श्री अरिजीत दत्ता चौधरी, महानिदेशक, राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् और आईआईसीटी के निदेशक डॉ. डी. श्रीनिवास रेड्डी की अध्यक्षता में दिनांक 12 अक्तूबर 2023 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आईआईसीटी के प्रशासन नियंत्रक श्री एम. आनंद कुमार ने हिंदी अनुभाग की उपलब्धियों जैसे कि हैदराबाद में स्थित सीएसआईआर की तीनों प्रयोगशालाओं एनजीआरआई, सीसीएमबी, आईआईसीटी की संयुक्त एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन, अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस,

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर प्रसिद्ध विद्वानों का समीचीन विषयों पर व्याख्यान तथा भारत सरकार की नीति के अनुरूप हिंदी में ज्ञान-विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए संस्थान से हिंदी पत्रिका 'स्पंदन' का पुनः प्रकाशन आदि का जिक्र किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए निदेशक डॉ. डी. श्रीनिवास रेड्डी ने सभी कार्मिकों को राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाई, जिसमें उन्होंने प्रतिज्ञा की कि संविधान के अनुच्छेद 343 तथा 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में, प्रतिबद्धता से कार्यालयीन कार्य करते हुए राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देंगे।

आगे उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि भारत में कई भाषाएँ हैं। हिंदी इन भाषाओं के बीच राजमार्ग का काम करती है। जैसे विभिन्न नदियाँ समुद्र में मिलती हैं और विशाल हो जाती हैं उसी तरह सभी भारतीय भाषाओं के शब्द हिंदी में मिलते हैं और अधिक विशाल हो जाती हैं। हिंदी आज भारत के बाहर भी प्रयोग की जाती है।

आप लोगों को जानकर खुशी होगी कि विश्व हिंदी सचिवालय का मुख्यालय मॉरिशस में है, जो कि भारत और मॉरिशस सरकार के संयुक्त उपक्रम से संचालित

होता है। आगे उन्होंने सभी से हिंदी में अत्यधिक काम करने की अपील करते हुए कहा कि तकनीक के माध्यम से अब हिंदी में काम करना आसान हो गया है। ई-ऑफिस में हिंदी में भी काम करने का विकल्प है। साथ ही उन्होंने सभी से स्पंदन पत्रिका के लिए रचनात्मक योगदान करने का भी जिक्र किया।

निदेशक डॉ. डी. श्रीनिवास रेड्डी राजभाषा प्रतिज्ञा दिलाते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अरिजीत दत्ता चौधरी, महानिदेशक, राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् ने भारत में हिंदी की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा कि जब दो भिन्न भाषाओं वाले आपस में मिलते हैं

तो हिंदी उनके बीच संपर्क भाषा का कार्य करती है, जैसे कि इस सभागार में बांग्ला, तेलगू, मराठी, तमिल, कन्नड़ आदि भाषाओं वाले लोग हैं और मैं हिंदी के द्वारा सभी से संवाद कर पा रहा हूँ।

साथ ही एक राष्ट्र के रूप में एक भारतीय भाषा की आवश्यकता है जिसमें लोग कार्य कर सकें और वह हिंदी ही हो सकती है।

उन्होंने हिंदी के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के प्रति जन-जागरूकता की भी बात की। उन्होंने आईआईसीटी में हिंदी के प्रति लोगों की रुझान एवं संस्थान में हिंदी कार्य की सराहना की और इसके लिए निदेशक महोदय, प्रशासन नियंत्रक, हिंदी अनुभाग एवं सभी

कार्मिकों की प्रशंसा की। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि, निदेशक और प्रशासन नियंत्रक महोदय के द्वारा वर्ष भर में हिंदी में सर्वाधिक काम करने वाले कार्मिकों को नकद पुरस्कार और प्रशंसा-पत्र से सम्मानित किया गया।

साथ ही इनके द्वारा हिंदी पखवाड़ा-2023 के सभी प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं को पुरस्कार और प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी अधिकारी डॉ. सौरभ कुमार के द्वारा किया गया तथा श्री आदर्श कुमार, हिंदी अनुवादक के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात राष्ट्र गान के साथ हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह - 2023 संपन्न हुआ।

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान में विश्व खाद्य दिवस समारोह का आयोजन

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-आईएचबीटी), पालमपुर में 16 अक्टूबर 2023 को विश्व खाद्य दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. विजय चौधरी, प्राचार्य एवं डीन, राजकीय स्नातकोत्तर आयुर्वेदिक महाविद्यालय, पपरोला ने “स्वास्थ्य और खुशहाली में भोजन का महत्व” विषय पर अपना व्याख्यान दिया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि आहार और विहार हमारे स्वास्थ्य

पर विशेष प्रभाव डालते हैं, जीवनशैली में बदलाव हमारे खान पान पर भी देखा जा सकता है और इसका प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। मिलेट्स और उसके गुणों पर भी डॉ. विजय चौधरी ने प्रकाश डाला।

समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. निपुण

जिंदल, आईएएस, उपायुक्त, कांगड़ा ने विश्व खाद्य दिवस पर अपने संबोधन में कहा कि खाद्य उपलब्धता एवं पोषण सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) का अभिन्न अंग है। उन्होंने मिड डे मील योजना और कुछ राज्यों में शुरू की गयी नाश्ता योजना का

भी जिक्र किया। शोध और पॉलिसी के बीच एक समन्वय स्थापित करने की जरूरत पर बल देते हुए उपायुक्त ने पोषण मैत्री अभियान में संस्थान से प्राप्त सहयोग की सराहना की



और भविष्य में इसे बढ़ाने का भी आवाहन किया। इस मौके पर उन्होंने डॉ. एम एस स्वामीनाथन, भारत में हरित क्रांति के जनक, का उल्लेख करते हुए उनके कार्यों को भी साझा किया। अंत में “कोई भूखा न सोये” कहते हुए अपने संभाषण को सम्पन्न किया।

इससे पहले संस्थान के निदेशक डा. सुदेश कुमार यादव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए डॉ. एम एस स्वामीनाथन की जीवनी पर प्रकाश डाला और उनके योगदान की चर्चा की।

उन्होंने बताया कि संस्थान खाद्य एवं पोषण विशेष तौर पर पारंपरिक भोजन एवं खाने योग्य पुष्पों पर शोध कर रहा है। निदेशक महोदय ने कहा कि खाद्य पदार्थों जैसे कांगड़ी धाम, आयुर्वेदिक खिचड़ी और

शीरा जैसे उत्पादों की प्रक्रिया को मानकीकृत किया गया है।

रेडी टू ईट बार को स्फिरुलिना का उपयोग करके आयरन और जिंक समृद्ध करने के लिए मूंगफली, तिल और अनाज मिलाकर विकसित किया गया है। इसी प्रकार रेडी टू ईट फ्रूट बार और कैंडी सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी को दूर करते हैं। इसी श्रृंखला में प्रोटीन और फाइबर समृद्ध बार बनाई गई हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि मल्टीग्रेन हाई प्रोटीन मिक्स उत्पाद को प्रोटीन और एनर्जी कुपोषण को दूर करने के लिए विकसित किया गया है। हिमालय के शीत मरुस्थल में उगने वाले बककवीट, जो ग्लुटिन मुक्त खाद्य पदार्थ है, से संस्थान ने पफ नूडल्स, पास्ता और रेडी टू ईट मूल्य

वर्धित उत्पाद विकसित किए हैं। ऐसे उत्पाद सीलिएक रोग से पीड़ित लोगों के लिए वरदान हैं।

इस अवसर पर तीन प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, तीन समझौता ज्ञापन और एक गैर प्रकटीकरण करार पर भी हस्ताक्षर किए गए। उपरोक्त में प्रमुख थे, डेक्कन हेल्थकेयर लिमिटेड, हैदराबाद तिरुपति मेडिकेयर लिमिटेड, सिरमौर हर्बल लाइफ लिमिटेड, बेंगलूर और जिला ग्रामीण विकास एजेंसी (डीआरडीए), कांगड़ा (हि प्र)। एसडीएम पालमपुर, वरिष्ठ राज्य प्रशासनिक अधिकारी, संस्थान के कर्मचारियों, छात्रों के साथ-साथ पालमपुर कृषि विश्वविद्यालय के आहार विज्ञान एवं पोषण विभाग के संकाय सदस्य तथा छात्र भी इस प्रोग्राम में शामिल हुए।

सीएसआईआर-निस्र में हिंदी माह 2023 आयोजन

हिंदी दिवस (14 सितंबर) के उपलक्ष्य में सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 1 से 30 सितंबर 2023 की अवधि में “हिंदी माह” मनाया गया, जिसका उद्घाटन समारोह दिनांक 01.09.2023 को पूर्वाह्न 11:00 बजे आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री राजेश कुमार सिंह रौशन, प्रशासन नियंत्रक के स्वागत सम्बोधन से हुआ। अपने सम्बोधन में उन्होंने हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत विविधता से भरा देश है और भाषा, संवाद तथा सम्प्रेषण का माध्यम है और हिंदी इस तथ्य पर खरी उतरती है। उन्होंने डॉ दीनबंधु एंड्रज का उदाहरण देते हुए बताया कि उन्होंने अंग्रेज होते हुए



भी हिंदी को बढ़ावा देने के प्रयास किए। श्री रौशन ने राजभाषा अधिनियम की धारा 351 का उल्लेख करते हुए कहा कि इस धारा में राजभाषा को सामासिक संस्कृति के सम्प्रेषण का माध्यम बताया गया है क्योंकि हिंदी सम्पूर्ण भारत में प्रमुखता से बोली जाने वाली भाषा है।

इस अवसर पर संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वरिष्ठ सदस्य तथा प्रमुख राजभाषा, श्री हसन जावेद खॉं, मुख्य वैज्ञानिक भाषा ने हिंदी माह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के बारे में संक्षेप में अपने विचार व्यक्त किए।

साथ ही उन्होंने हिंदी माह को सफल बनाने के लिए सभी कार्मिकों से अपील



की। उन्होंने उपस्थित सभी कार्मिकों से लेख, कहानी तथा कविताओं इत्यादि के माध्यम से अपनी हिन्दी लेखन क्षमता को निखारने तथा उन्हें राजभाषा छमाही पत्रिका नवसंचेतना में प्रकाशित कराने के लिए भी प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि लोग भाषा को हल्के में लेते हैं जबकि सच्चाई यह है कि भाषा का विशेष महत्व है तथा किसी भी रचना के सृजन हेतु भाषा की 80% प्रतिभागिता रहती है तथा सृजित रचना की शैली, प्रस्तुतीकरण उसके अभिन्न अंग हैं।

इस अवसर पर संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी श्री बिरंची सारंग ने हिन्दी के महत्व पर चर्चा करते हुए कहा कि विश्व में हिन्दी का महत्व बढ़ाने में देश की आर्थिकी का हाथ है क्योंकि भारत

विश्व का सबसे बड़ा बाजार है और गूगल का हिन्दी सर्व इंजन इस का एक अच्छा उदाहरण है। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दी पूरे भारत को जोड़ने वाली भाषा है और हिन्दी परिवर्तनीय है, समृद्ध भाषा है और अपनी सुग्राह्यता तथा स्वीकार्यता के रहते वह प्रचारित प्रसारित हो रही है। इस अवसर पर चर्चा के दौरान अन्य वैज्ञानिकों ने भी भाषा के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किये।

हिन्दी माह के दौरान संस्थान के नियमित कार्मिकों तथा एसीएसआईआर के विद्यार्थियों और विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत परियोजना स्टाफ के लिए निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया:

1. हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता (दिनांक 18.09.2023) (जिसका विषय

प्रतियोगिता स्थल पर दिया गया)

2. भाषण प्रतियोगिता

(दिनांक 20.09.2023)

3. कविता पाठ प्रतियोगिता

(दिनांक 21.09.2023)

4. किवज प्रतियोगिता

(दिनांक 22.09.2023)

दिनांक 29.09.2023 को पूर्वाह्न 11 बजे विवेकानंद कक्ष में 'हिन्दी माह समापन समारोह' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद की प्रयोगशाला सीएसआईआर-सीजीसीआरआई के पूर्व वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी तथा साहित्यकार श्री प्रियंकर पालीवाल को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर अध्यक्षीय संबोधन में

सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल जी ने संस्थान में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की प्रगति का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया तथा संस्थान द्वारा हिन्दी भाषा के माध्यम से किए जा रहे वैज्ञानिक कार्यों का भी वर्णन किया।

श्री पालीवाल ने हिन्दी भाषा की वर्तमान स्थिति पर बोलते हुए कहा कि अपनी भाषा के महत्व को समझ कर उसका बखूबी प्रयोग करना ही भाषा को संवृद्धि प्रदान कर सकता है।

कई लोग हिन्दी को दोयम दर्जे का मानकर उसका प्रयोग करने में हिचकिचाते हैं तथा उनका अपनी भाषा के प्रति ऐसा रवैया हिन्दी भाषा की प्रगति में बाधक है। सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति पर चर्चा करते हुए उन्होंने हिन्दी के सरकारी कामकाज की भाषा बनने से लेकर वर्तमान में उसकी दशा तथा भविष्य की दिशा निर्धारित करने के सभी मुद्दों पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

उन्होंने प्रशासनिक हिन्दी के प्रयोग तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में प्रयोग के लिए गठित वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के द्वारा प्रस्तुत हिन्दी पर्यायों के विषय में भी कुछ रोचक प्रसंग श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत किए।

श्री पालीवाल ने यह भी कहा कि वैज्ञानिक सोच और विज्ञान लेखन को हिन्दी में करने को हमें गंभीरता से लेना चाहिए।

प्रथम तकनीकी शब्दावली आयोग का

अध्यक्ष प्रो. डी एस कोठारी जैसे कद्दावर वैज्ञानिक को बनाना हमारी गंभीरता को दर्शाता है किन्तु परवर्ती वर्षों में हम गंभीर नहीं रहे। हमें मिलकर हिन्दी को उच्चतर मानकों तक पहुँचाने हेतु कठोर प्रयास करने होंगे।

मुख्य अतिथि के व्याख्यान के पश्चात मुख्य अतिथि, निदेशक महोदया तथा प्रशासन नियंत्रक महोदय द्वारा संस्थान में आयोजित सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

इसके अतिरिक्त, पिछले एक वर्ष अर्थात् दिनांक 01-09-2022 से 31-08-2023 की अवधि में सीएसआईआर-निस्पर में सरकारी कार्य (प्रशासन, वित्त एवं लेखा और भंडार एवं क्रय संबंधी) मूल रूप से हिंदी में करने वाले (वर्ष में कम से कम 20 हजार शब्द या उससे अधिक शब्द हिंदी में लिखने हेतु) पात्र अधिकारियों/कर्मचारियों को नियमानुसार 'राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार' और वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी में कार्य (किसी प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पत्रिका में हिंदी में अपना पेपर या लेख प्रकाशित कराना, राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी में हिंदी में अपना पेपर या लेख प्रस्तुत करना और अन्य प्रकार के कार्य) करने वाले वैज्ञानिकों/तकनीकी स्टाफ को 'विशिष्ट प्रोत्साहन पुरस्कार' प्रदान किए गए।

प्रशासन नियंत्रक महोदय के द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करने तथा राष्ट्रीय गान के साथ ही समारोह सम्पन्न हुआ।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक

सीएसआईआर समाचार